" वेदना का दूसरा नाम : सफेद मेमने "

डॉ मंत्री रामधन आडे
हिंदी विभाग, (शोध निर्देशक)
तुलजाभवानी महाविद्यालय तुलजापुर
Email-drmantri2@gmail.com

'सफेद मेमने' मणि मधुकर द्वारा लिखित यह उपन्यास पर्याप्त चर्चित है। एक विषाद-रस में डुबी बाडनेर के सुखे रेगिस्तान में स्थित धूल के टीलो, आंधी और दमघोट एकाकीपन से जकडे राजस्थानी अंचल के नेगिया, बराऊ, गाबासी गाँव की कहानी है। जिसकी रिक्कता में व्यक्तियों को अपना व्यतीत और वर्तमान पराया-पराया लगता है। आधुनिक जीवन की ऊब, अजनबीपन संत्राज्ञ, व्यर्थ बोधता आदि को संकेतित किया गया है। इन ढाणियों में बसे मानवो की कथा है जो किसी न किसी रूप में भगोडे है। इसका परिवेश महानगर न होकर रेगिस्तान है। इस में नगरो की भीड के बजाए रेगिस्तान का एकान्त है। स्वयं लेखक के शब्दों में "यह उन भगोडो की कथा है और इसे एक भगोडे ने जो रेत और दूसरी दुनिया के बीच, सुखी-विचार हवा में टंगा हुआ है, उदासी में लिखा है। "[1] यंत्र और विकास के इस युग में आज परिवर्तन दिखाई देता है। हमारे देश में ऐसे इलाके है जहाँ प्रगति ने पाँव तक नही रखे है, एक प्रकार से परायेपन उब और सन्नाटे की सोय-सोय की बीच वहाँ आदमी भोथरा हो जाने की नियति से विवश है। इस उपन्यास में राजस्थान की रेतीली धरती पर बसे नेगिया, बराऊ, गाबासी जैसी ढाणियों

(छोटे-छोटे गाँव) के वासिन्दो की कथा है। इसके पात्र नगर बोध से मुडे हुए है और रेगिस्तान के मनहूस वातावरण में अधिक ऊब का एहसास होता है। डाकघर की फाईलो का चूहों द्वारा कुतरा जाना, मानो जिन्दगी का तिल-तिल कर टुटना है। इसके सभी पात्र विषाद की धुंध में विचरण कर रहे है। जरसू डाकिया, रामैतार (पोष्ट मास्तर), रक्खे (रामैतार का नौकर), डॉ. भानमल (जानवरो का डॉक्टर) बन्नो (रामैतार की पत्नी), सूरजा (गाबासी की एक जाटनी), जंतरी (एक खानाबदोश औरत) रमणी (जंतरी का पति) मीनिया (जंतरी का लड़का) जैसे पात्रों की अन्तर्व्यथा को पाटकों के सम्मुख उकेरती है। यह एक विषाद रस में डुबा हुआ उपन्यास है। सभी पात्रो का अदृश्य शत्रु से भयग्रस्त रहना आज के जीवन मे व्याप्त संत्रास का सूचक है। लेखक यह कहना चाह रहा है, आज का जीवन रेत मात्र होकर रह गया है।

मणि मधुकर ने वातावरण चित्रण के माध्यम से मनुष्य की चेतना पर छा जानेवाले इस सघन एकान्त को उभारने का प्रयास किया है। कामू ने कही लिखा है आज के परिवेश में व्याप्त विषाद की छाया को आत्मसात कर उसे मूर्तिमन्त अभिव्यक्ति प्रदान करना ही शायद आज के लेखक की नियति है और इस उपन्यास में लेखक ने पात्रों द्वारा परिवेश में व्याप्त विषाद की छाया को पकड़ने का प्रयास किया। इस उपन्यास को पढ़ते समय गुजराती उपन्यास साहित्य युवा कवि उपन्यासकार स्व. रावजी पटेल द्वारा रचित उपन्यास 'अश्रुधर' बारबार स्मृति पट पर उभर आता है। उपन्यास का आरंभ प्रतीकात्मक चित्र से होता है। जहाँ एक नारी जीवन का सवाल है, इसमें बन्ना, सूरजा, और जंतरी जैसे स्त्रियों के चरित्र उपलब्ध होते है। रामैतार एक महत्वकांक्षी पर अब हतप्रभ और मायूसी में डुबा हुआ व्यक्ति है। "आसपास के धूसर धुंधल के में तमाम चीज डुब-सी गई थी। फोगझाडियों के बीच में से किसी तरह जगह बनाकर निकलता हुआ रास्ता बार-बार अपनी पहचान खोता हुआ रास्ता जिजीविषा भरे मनुष्य के बार-बार एकांत के गहराते बोध से उत्पन्न ऊब और नीरसता के बीच दिग्भ्रमित होने और पुनःपुन

जीने के प्रयत्न की प्रतिकात्मक व्यंजना करता है।"[2] उनके इस उपन्यास से परम्परागत गतिरोध टूटा है तथा हिन्दी उपन्यास को नया मुहावर मिला है।

रेगिस्तान के उजाड एकान्त में अकेलेपन, मामुलीपन, अजनबीपन के बोध को अधिक गहराई में देखा गया है। इस परिवेश के बियाबान के साँय-साँय में दमघोट एकाकीपन गहराने लगता है। बन्ना रामैतार की भार्या है। "उसने अपनी मामी से सैंतालीस के दंगो की रोमहर्षक कथा सुनी थी कि किस तरह उसकी माँ को नंगी देह को आठ-नौ जनों ने रोंदा था और किस प्रकार उसके स्तनों की घुण्डियाँ उतार ली गई थी और कैसे उसके कूल्हों के बीच में मिर्ची का चूरा भर दिया गया था।" [3] इस वर्णन से बन्ना के भीतर की रसार्द्रता समाप्त हो चुकी थी। एक ठण्डी औरत थी। पुरुष के प्रति उसके मन में आकर्षण समाप्त हो चुका था। उसका स्त्रीत्व 'मछली मरी हुई' की प्रिया तथा 'सूरजमुखी अँधेरे' की रत्ती की भाँति एक हिमशीला में तब्दील हो चुका था। रामैतार ने कभी बन्ना को सन्तुष्ट नही कर सका। जिस प्रकार रत्ती का ठण्डापन दिवाकर से टूटता है, उसी प्रकार बन्ना की यह 'हिमशीला' भी प्रदेश के छटे हुए बदमाश सन्दो के सम्पर्क में आकर उसे सर्व प्रथम पुरुष की ताकत का अनुभव होता है। "कुछ पलो बाद वह खाट पर थी और सन्दो उसके रोएं-रेशे बिखेर रहा था। उसकी आँखे मुद गयी। शरीर हल्का-हल्का हो गया। सन्दो की भारी-भारी सांसे उसे मसल रही थी। होंठो को होंठो में पीसा जा रहा था और बांहो पर बढ़ता हुआ दबाव उस गहरी एकरसता को टूक-टूक कर रहा था, जो उसके भीतर पत्थर की भांति कठोर पड गयी थी। बन्ना को लगा पहली बार उसे पुरुष ने छुआ है, उसके कौमार्य की जड़ता को अपने अनन्त बल से भंग किया है। वह शांत हो गयी ओर सन्दो की भुजाओं में अधर उठ गयी।" [4] बन्ना को सन्दो से गर्भ भी रहता है और वह सन्दो के साथ पाकिस्तान भाग जाती है। कुछ ही दिनों में सन्दो उस से ऊबकर एक दूसरी औरत को रखौल के रूप में घर में बिठा देता है। सन्दो रक्खे की नाजायज

औलाद है। बन्ना के कोख में उसका गर्भ पल रहा है। इस प्रकार से नाजायज सन्तानों की परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी कायम रहती है। एक आदमी जिसने कभी शादी नही की उसकी तीसरी पीढ़ी जन्म लेने जा रही थी। मणि मधुकर कहते है, "जिस व्यक्ति ने कभी ब्याह नही किया, न गृहस्थी जमायी, न घर का कोई दन्द-फन्द किया, जिन्दगी भर अकेला अपने में सिमठा-सिमठा रहा, लेकिन फिर भी उसका वंश खत्म नही हुआ। वह एक अनजाने बहाव में शामिल है और पूरी गति से बढ़ रहा है।" 5

सन्दो की रंगों में जाटो का खून छोड़ रहा है और वह अपने आप को राजपूत समझता हुआ सूरजा की खुमारी दूर करने के लिए अपने दोस्तों द्वारा उस पर जब-तब बलात्कार करवाता रहता है। सूरजा जाटनी इस उपन्यास का एक पानीदार चरित्र है। दो जातियों या कौमैं के जर में भी प्रतिशोध लेने का माध्यम स्त्री को ही बनाया जाता है। कूर, अमानुषिक सामंती मानसिकता को सन्दो-सुरजा प्रकरण के माध्यम से मणि मधुकर ने बड़े कारूणिक ढंग उभारा है। रामायण से लेकर वर्तमान युग तक में अपने इन्तकाम की भडास निकालने के लिए नारी का उपयोग भी एक खेल के रूप में होता रहा है। डॉ. रमेश कुन्तल मेघ के अनुसार जाटणी सुरजा एक मेमने की तरह है जिसे महज संभोग के लिए छिला जाता है। 'सुरजा जस्सू के भीतर आते ही अपना लहंगा ऊपर उठाकर मुँह फेरकर बोलती है चढ़ जाओ "6 परन्तु जस्सू ऐसा कुछ नही करता। जस्सू की सच्चे चरित्र पर प्रभावित होती है और वह उसे कहती है कि सन्दो उसकी आँखो में आँसू देखना चाहता है; पर वह सच्ची जाटणी है, एक साथ दस मर्दो को झेल सकती है और मुंह से सिसकारी तक निकलने नही देती है। जस्सू सन्दो के फंदे से सूरजा को नही बच्चा सकता अतः आत्महीनता के बीच से जस्सू पतन की गर्त में गिरता ही जाता है। सच ही व्यक्ति क्षणो में जीता है। जो जस्सू सूरजा के कहने पर भी उससे संभोग नही करता वह अन्त में जन्तरी नामक एक सामान्य खानाबदोश औरत पर बलात्कार का असफसल प्रयत्न करता है। लँगड़ा पागल भीमा-एक

गबरू जवान है, अपाहिज व्यक्तियों का संदर्भ भग्न आशाओं से अपने आप जुड़ जाता है। रघुवंश का नीरा, लक्ष्मीकांत वर्मा का डॉ. संतोषी और मणि मधुकर का भीमा क्यों अपंग हो जाते है ? इनकी अपंगता कल्पनाओं के उजड़े संसार को प्रतिबिम्बित करती है। वे मानसिक दृष्टि से अपंग नही होते, उनका मानवीय मूल्यों में विश्वास अन्त तक बना रहता है। पोष्ट मास्टर रामैतार को बचपन में कभी पं. नेहरू ने थपथपाया था। इसी थपथपाहट को रामैतार आज तक पाले हुए है। शायद एक नजर में पहचान गये थे कि मुझमें प्रतिभा है। इस प्रतिभा की सहज पहचान से वह नेहरू का मुरीद है और किसी सुनहले भविष्य को न पाने के कारण वह खोया खोया कहता है "यह इलाका दुनियाँ से कितना कटा हुआ है। मेरे दिल में बड़ी-बड़ी ख्वाहिशे थी। अब तो मैं बिलकुल भूल गया हूँ कि वे क्या थी और कैसी थी? शायद मै नेता बनना चाहता था। मै नही जानता कि मुझे क्या होता जा रहा है आजकल कोई भी नही जानता "7 जस्सू डाकिया जानता है कि कोई धारदार चीज रामैतार को काटे जा रही है और उसका मन यहाँ नही लगता। कोई बात है जो रामैतार को सता रही है पर इसकी पड़ताल वह नही कर पाता है। कुछ तो है जो भीतर-भीतर ही उसे खाता जा रहा है। जिसे भूलाने के लिए वह हिरनों तो कभी गिलहरियों के बीच धूमा करता है। अपनी पत्नी के तनाव को लिंकन की महानता और उसकी स्त्री की खटपट से जोड़कर वह अपने चोट खाये अंह व पौरूष को सहलाया करता था।

जानवरों का डॉक्टर भानमल एक भगोडा पात्र है नेगिया गाँव के लोग 'जिनावर साहब' कहने लग गये थे, अपनी अर्थहीनता और निरर्थकता से छुटकारा पाने के लिए चाय की कड़वाहट पीता और सोखता है। एक मित्र की सहायता के लिए बैंक में गबन करता है। उसने अपनी पत्नी की हत्या भी की थी। वही डॉक्टर भानमल भीमा को जी-जान से मेहनत कर बचा भी लेता है पर खोपड़ी में चोट आने से वह पागल हो जाता है और वही डॉक्टर जब देखता है कि नस ऊठ जाने से सात नम्बर की कोठरी वाली भैंस भांभर रही है

तब उसके साथ मैथुन भी करता है। उसके पहले वह जस्सू बन्ना रामैतार के आगे बड़ी दार्शनिक बाते करता है। इस प्रकार डॉ. भानमल का व्यक्तित्व निराशा के अन्धकार में डुबे हुए दमित कामवाले व्यक्ति का है। वह सोचता है इस जीवन में हर जगह गड्ढे और खण्डहर है, हर जगह गंदी और बदबूदार है; और काम के नाम पर अपने को धोखा देना भर रह गया है। हर खरोच को सहलाना, मलहम लगाना और शान में अकड़ना बस यही इस जीवन में है। डॉ. भानमल कहता है "हर आदमी भगोडा होता है" 8 बन्ना के आगे अकेलापन और अजनबीपन चट्टान की भाँति अडा है और जिसे तोड़ने के लिए बन्ना प्रदेश के छटे बदमाश के साथ भाग जाती है। हताश रामैतार फीकेपन से कहता है "मैं-मैं नहीं बदला। रेत आदमी को बदलती नही है, वही का वही निर्जीव बना देती है। यहाँ से लौटकर मैं अपने को मुक्त अनुभव करूंगा। कोई ढंग का काम शुरू करने की भी सोचूंगा। जैसे सर्वोदय की शाखा चलाना या और कुछ ऐसा ही " 9

जस्सू की विवशता आज की मानवीय नियति की विवशता से जुड़ जाती है। सूरजा को सन्दो ने पुलिस के हवाले कर दिया था वे उसकी और दुर्दशा करते है। रामैतार नेता बनने के चक्कर में क्रांतिदल के मेम्बर हो जाते है। जस्सू नेगिया से निकलकर, दिल्ली, मुंगेर, गोरखपूर, बनारस शहरो में भटकता हुआ नक्सलवादियों के ग्रुप में शामिल होकर पकडा जाता है और जेल काटता है। रणजी, जन्तरी, मिनियन अपनी खानाबदोश जिन्दगी जिते है। जरसू डॉ. भानमल, रामैतार, बन्ना, सब की विवशता अजनबीपन के विविध आयामैं से जुड़ जाती है, जो मानवीय नियति की अभिशप्तता को रेत की प्रतीकात्मकता में गहराती है। सभी पात्र संत्रस्त पीड़ित और मायूसगी में डुबे हुए है। उपन्यास आधुनिक बोध की गवाही देने लगता है। रेत की सन्नाट रिक्तता में भगोडे बिखर और टुट जाते है। मणि मधुकर ने अपनी तरफ से नौतिकता-अनैतिकता का कोई थिगडा नही चिपकाया है। अत: में हम इस उपन्यास को यथार्थवादी कुछ हद तक प्रकृतिवादी कह सकते है। इसमें डरे

हुए अपने अस्तित्व के लिए जुझते हुए मेमने हमे दिखाई देते है। मणि मधुकर ने अन्तिम पृष्ट पर बहुत संक्षेप में उसका संकेत दिया है "अकसर मुझे लगता है कि रेवड की तमाम भेंडों को पीछे छोड़कर अचानक कुछ सफेद मेमने आगे निकल आये है। वे अपनी मामूली दम खम के बूते पर भाग रहे है, लडखडाकर गिर रहे है, लहुलूहान हो रहे है, फिर उठकर हाफ रहे है और उसी तरह छोड़ रहे है। एक डर उनके भीतर है, एक डर उनके बाहर है। एक अनदेखे कसाई का अदृश्य छूरा उनका पीछ कर रहा है। वे बचना चाहते हैं, इसलिए उस सांस-तोड़ भागा-भागी के सिवा कोई चारा नही है"20 इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में राजस्थान के दूर-दराज के रेगिस्तान गाँवो के जीवन को रूपायित किया गया है।

निष्कर्षत : मणि मधुकर का व्यक्तित्व एक साहित्यकार के अवदात गुणों से पुष्ट है। वे जनजीवन के गायक है। उन्होने गहन एवं महत्वपूर्ण साहित्य का सृजन किया। मेहनत, धौर्य और लगन के साथ उन्होंने अपने यथार्थवादी साहित्य का निर्माण किया है। इसमें अदभूत शिल्प का परिचय मिलता है जो अनुशासन से युक्त है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में उनका योगदान विशेष उल्लेखनीय है। संगीत और प्रकृति से उन्हे विशेष लगाव था। उनकी रचनाओं में लोककथा और संगीत का प्रयोग मिलता है। उन्होने गहन एवं महत्त्वपूर्ण साहित्य का सृजन किया। मणि मधुकर का साहित्य सामाजिक सरोकार और दायित्व बोध का निर्वहन करता है। एक कलाकार का आत्म संघर्ष उनकी प्रत्येक कृति में निहित है, भले ही वह विभिन्न पात्रों के माध्यम से उदघाटित हुआ हो। उनके उपन्यास, कहानी के अध्ययन में एक बात विचारणीय है कि उनकी कहानियों में उपन्यासों में नारी अधिक संघर्षरत प्रतीत होती है। उनका दृष्टिकोन मानवतावादी है। इसलिए उनका व्यक्तित्व हम लोगों के लिए प्रेरणादायी है। अपने जिंदादिल व्यक्तित्व से मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीड़ा और दर्द को उन्होने गहराई से लिखा है। इसी कारण उनका लेखन पाठकों के मर्म को

छूता है। उन्होंने एक साथ कई विधाओं में साहित्य सृजन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय हमे कराया है। उनके विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही उन्हे संपूर्ण साहित्य-जगत की आस्था और श्रध्दा अविरल रूप से प्राप्त है। वे अपने युग के प्रति अत्यंत जागृक है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के आधार " पर हम उन्हे एक ध्ययेधर्मी रचनाकार मान सकते है। समग्र परिवेश को चित्रित करनेवाले महान साहित्यकार है उनके व्यक्तित्व में महान मानवता के दर्शन होते है। समग्रता की यथार्थता एवं वास्तविक कहानी बतानेवाले महान हस्ताक्षर है। मणि मधुकर का साहित्य हिन्दी साहित्य के लिए सदैव उत्प्रेरक रहेगा और रचनाकारों को भी बल प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1) बोलो बोधिवृक्ष (मणि मधुकर के साथ महेश आनंद और देवेन्द्रराज अंकुर की भेटवार्ता, पृष्ठ - 6,7,14,15,12

2) सफेद मेमने मणि मधुकर, पृ. 7, 8

3) सफेद मेमने मणि मधुकर, पृ. 78

4) सफेद मेमने - मणि मधुकर, पृ. 120

5) सफेद मेमने मणि मधुकर, पृ. 53

6) सफेद मेमने - मणि मधुकर, पृ. 11

7) सफेद मेमने - मणि मधुकर, पृ. 35

8) - सफेद मेमने मणि मधुकर, पृ. 134

9) सफेद मेमने - मणि मधुकर, पृ. 143

10) आजकल ' पत्रिका मार्च (2008) पत्रकार, दिलीप मंडल, पृ. 48

11) सं. डॉ. गोपालराय पत्रिकाएँ, समीक्षा अप्रैल-जुन (1982), पृ. 44, 43